भ्रष्ट डीईओ मुनीष ने बचाव में उतारा मरा मोहरा मंजीत सिंह

फ़रीदाबाद (म.मो.) सरकारी फंड के 27 लाख रुपये के गबन केस में फंसी डीईओ मुनीष चौधरी ने, 'खिसियानी बिल्ली खम्बा नोचे' की तर्ज पर पूर्व डीईओ रितु चौधरी को अपने से भी ज्यादा भ्रष्ट एवं घोटालेबाज साबित करने के लिये एक सेवा निवृत डिप्टी डीईओ मंजीत सिंह को मैदान में उतारा है। लकड़ी की तलवार सरीखे आरोपों से पूर्व डीईओ पर हमला करते हुए मंजीत सिंह बाकायदा प्रेस वार्ता करके उन पर करोड़ों रुपये के गबन का आरोप लगाते हैं।

मंजीत कहते हैं कि पूर्व डीईओ रितु ने करीब सात-आठ साल पहले बतौर बीईओ (खंड शिक्षा अधिकारी) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की सराय ख्वाजा साखा में अपने नाम व पद से एक निजी खाता खुलवाया था। इस खाते में उन्होंने जबरन अपने स्टाफ़ व अन्य सम्बन्धित लोगों से बड़ी मात्रा में धन की वसूली की थी। इस बावत उन्होंने आरटीआई के माध्यम से तमाम प्रमाण एकत्र करके सम्बन्धित उच्चाधिकारियों को शिकायतें की थी, लेकिन आज तक कोई कार्रवाई नहीं की।

कार्रवाई होती भी कैसे? ऊपर बैठे तमाम उच्चाधिकारी मंजीत सिंह की तरह अक्ल के अंधे तो हैं नहीं जो इस तरह की बेबुनियाद शिकायतों पर कोई कार्रवाई कर पाते।

'मज़दूर मोर्चा' ने अपनी जांच में पाया कि तत्कालीन बीईओ रितु चौधरी ने गरीब एवं बेसहारा अपने स्कूली बच्चों के लिये एक निजी कोष की स्थापना की थी। उनकी प्रेरणा से स्टाफ के अनेकों शिक्षक व कर्मचारी, उस वक्त अत्यधिक प्रभावित हो गये जब उन्होंने स्वयम् अपनी जेब से एक लाख रुपये इस कोष में डाले। इससे प्रेरित करीब 70-75 स्टाफ़ सदस्यों ने भी अपनी-अपनी श्रद्धा एवं क्षमतानुसार 100, 200,1000, 2000 इत्यादि रुपये इस कोष में दान किये थे। रितु के अपने एक लाख व अन्य लोगों से आये दान की कुल रकम एक लाख 72 हजार हो गई, जो आज तक भी उसी बैंक के उसी खाते में ज्यों की त्यों पड़ी हुई है।

खाते में रकम ज्यों की त्यों इसलिये पड़ी रह गई कि मुनीष चौधरी व मंजीत सिंह जैसे जनविरोधी लोगों के पेट में, रितु के इस कदम से इतना दर्द हुआ कि उनका तबादला गुड़गांव करा दिया गया। उनके स्थान पर बीईओ का चार्ज मुनीष चौधरी को मिल गया। शिकायतबाजी व तबादले के चलते रितु चौधरी वह सब नहीं कर पाई जो वे बेसहारा एवं अपने गरीब छात्रों के लिये करना चाहती थी।

गौरतलब है कि आज तक भी इस फंड में किसी दान दाता ने तत्कालीन बीईओ के खिलाफ़ कोई शिकायत कहीं दायर नहीं की है। इस सारे मामले को समझने के बाद अक्ल के दुश्मन सरदार मनजीत सिंह से कोई यह पूछे कि इसमें जुर्म क्या बना और कोई कार्रवाई क्या करे? जाहिर है कि मंजीत सिंह यह सारी कवायद गबन केस में आरोपित डीईओ

मुनीष चौधरी को राहत पहुंचाने के इरादे से कर रहे हैं। वैसे भी मुनीष अपने विरुद्ध दर्ज एफआईआर के लिये पूर्व डीईओ को जिम्मेदार ठहरा चुकी है।

अपने आप को कवि बताने वाले मंजीत 49 देशों का दौरा कर चुकने का दावा भी करते हैं। इसके अलावा वे अपने आप को 9-10 किताबों का लेखक भी बताते हैं। सवाल पैदा होता है कि उक्त कामों में व्यस्त रहने वाले मास्टर मंजीत सिंह बच्चों को पढ़ाते कब थे?

दूसरा सवाल यह भी पैदा होता है कि क्या उन्होंने इतनी विदेश यात्रायें करने की कोई परमिशन अपने विभाग से ली थी या मुनीष चौधरी की तरह बिना परमिशन व छुट्टी लिये ही विदेश भ्रमण करते रहे? इनके विभागीय सूत्र बताते हैं कि इन्होंने प्रिंसिपल से पदोन्नत होकर बीईओ बनने से इन्कार कर दिया था। कुछ वर्ष बाद इन्हें अपनी मूर्खता का एहसास हुआ तो जुगाड़बाजी करके सीधे डिप्टी डीईओ पद पर पदोन्नत हो गये जो कि नियमों के विरुद्ध था।

कवि मंजीत सिंह को तत्कालीन बीईओ का उक्त उपक्रम तो घोटाला प्रतित होता है। लेकिन फर्जी डिग्री के आधार पर 20 साल तक सर्व शिक्षा अभियान में डकैतियां मारने वाला दीपक कपूर नजर नहीं आता जो इन्हीं के स्कूल में रहकर सारे गुल खिलाता रहा। इसी तरह सेहतपुर के स्कूल में 50-60 लाख रुपये का भवन निर्माण घोटाला करने वाला यतिन्द्र शास्त्री भी इनको नजर नहीं आता।

सर्वविदित है कि उक्त दोनों के विरुद्ध एफआईआर दर्ज हैं। यतिन्द्र से तो उक्त रकम की वसूली करने के भी आदेश आये हुए हैं। उसे नौकरी से बर्खास्तगी की ओर ले जाने की बजाय डीईओ मुनीष ने उसे नौकरी पर बहाल कर दिया है। इस पर भी कवि ह्दर मंजीत खामोश हैं।

विधायक सीमा त्रिखा को बीमार बीके अस्पताल की सुध लेने की सूझी

फ़रीदाबाद (म.मो.) दिनांक 10 अक्टूबर को स्थानीय विधायक सीमा त्रिखा ने अपने क्षेत्र में स्थित बादशाहखान अस्पताल का दौरा करके वहां पर होने वाली मरीजों की दुर्दशा को देखने व समझने का प्रयास किया।

गतांक में सुधी पाठकों ने इस बीके अस्पताल में मरीजों की दुर्दशा के साथ-साथ लोकल परचेज में हो रहे घोटाले के बारे में विस्तार से पढ़ा ही होगा। भारी मात्रा में लोकल परचेज होने के अलावा सतीश चौपड़ा जैसे अनेकों दानवीर भी समय-समय पर अस्पताल को दवाइयां दान करते रहते हैं। इसके बावजूद, अस्पताल में मौजूद गरीबों का खून चूसने वाली जोंकें हर छोटी से छोटी दवाई, मलहम-पट्टी आदि के लिये उन्हें बाजार की ओर दौड़ाती रहती हैं।

इसके अलावा अस्पताल स्टाफ़ में मौजूद प्राइवेट अस्पतालों के दल्ले हर मरीज को अपनी-अपनी सेटिंग वाले निजी अस्पतालों की ओर धकेलते रहते हैं। पर्याप्त मात्रा में सफाई कर्मचारी व अन्य सहायक स्टाफ होने के बावजूद अस्पताल के गलियारों तथा वार्डों में गंदगी व सड़ांध छाई रहती है। दरअसल ठेकेदारी में काम करने वाले इन कर्मचारियों में से अधिकांश फरलो पर रहते हैं अथवा अधिकारियों द्वारा उन्हें कहीं और इस्तेमाल किया जा रहा होता है।

'मज़दूर मोर्चा' द्वारा लगातार इन विषयों पर आवाज बुलंद किये जाने के बावजूद, अब पहली बार लगता है कि स्थानीय विधायक सीमा त्रिखा तक गरीबों की आवाज पहुंच पाई है। उन्होंने पूर्व सूचना तथा पीएमओ

को साथ लिये बगैर ही पूरे अस्पताल का अवलोकन कर डाला। सबसे ज्यादा गंद मचने वाले महिला एवं प्रसूति वार्ड में सर्वाधिक समय लगा कर महिला मरीज़ों की समस्याओं को सुना। इस दौरान ड्यूटी पर तैनात चार-पांच डॉक्टर जरूर स्वत: ही उनके साथ लग लिये थे। परन्तु अपने वातानुकूलित दफ्तर में, अपराध बोध से ग्रसित बैठी पीएमओ डॉ. सविता यादव, विधायक महोदया के सामने जाने तक की हिम्मत नहीं जुटा पाई।

बेशक यह अस्पताल सीमा त्रिखा के क्षेत्र में पड़ता है, लेकिन जिले भर का मुख्य सरकारी अस्पताल होने के नाते तमाम 6 विधायकों तथा सांसद का दायित्व बनता है कि वे इस अस्पताल पर कड़ी निगरानी रखें। शायद ही कोई दिन खाली जाता होगा जब इस अस्पताल के काले-पीले कारनामे मीडिया द्वारा प्रकाशित न किये जाते हों। इसके बावजूद जनप्रतिनिधियों का, इसके प्रति उदासीन बना रहना उन सबको दोषी ठहराता है। यदि ये जनप्रतिनिधी ईमानदारी एवं निष्ठापूर्वक इस अस्पताल के साथ-साथ अन्य सम्बन्धित स्वास्थ्य केन्दों पर नजर रखें तो जनता को काफ़ी राहत मिल सकती है।

ठग हो गये सक्रिय, पुलिस बनी है निष्क्रिय

नीलिमा

फ़रीदाबाद (म.मो.) इन दिनों फेसबुक और इंस्टाग्राम के जरिये लुभावने सपने दिखाकर ठग, लोगों को निशाना बना रहे हैं। बिना पैसे के घर बैठे शुरू करें ये काम, होगी बंपर कमाई, बस करना होगा ये काम। ऐसा वीडियो वायरल कर लोगों को चूना लगाते हैं। एक वीडियो में दिखाया है कि ये मशीन आपके घर पर लगा दिया जायेगा और सामान भी भेजा जायेगा। बेरोजगार, अनपढ़ कोई भी महिला पुरूष रोजाना घर बैठे काम करके एक हजार रुपये डेली कमा सकते हैं। अपना वार्ट्सऐप नम्बर भी दिया है कि इस नम्बर पर सम्पर्क करें। इस बेरोजगारी के दौर में लोगों के लिये इस तरह का वीडिया देखकर ठगी का शिकार हो जाना कोई बड़ी बात नहीं हैं।

एक वीडियो में था कि एक मशीन है और पन्नी की थाली, प्लेट, कटोरी ये सब उसमें आसानी से बन रहा है। यानी कोई भी अनपढ ये काम आसानी से कर लेगा और एक मिनट में 10 से ज्यादा ही थाली बन जायेगा। दूसरा वीडियो था, डिब्बे में पेंसिल, पेन रबर, कटर, और भी कई तरह के जैसे कपड़े, मशाले इत्यादि पैकिंग करने का।

ऐसा देखने के बाद मैंने कम्पनी को फोन करके कहा, मैं बेरोजगार हूं और घर बैठे ये काम करना चाहती हूं। कृपया आप विस्तार से बतायें। इस पर वो अपनी रटी-रटाई बातें कहने लगा। मेरा ये होमवर्क पूरे हिन्दुस्तान में हर जगह है, यानी हर स्टेट में मेरा डिपार्टमेंट है। जैसे महाराष्ट्र, गुजरात, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, छत्तीसगढ, उड़ीसा कोई भी स्टेट हो, कहीं पर भी हो आप, इंडिया के किसी भी कोने में घर बैठे आसानी से ये काम कर सकते हो। आपको एक डिब्बी में 20 पेन या पेंसिल, कोई भी ब्रांड का पैकिंग करना है। वो सस्ता या महंगा वाला हो 10, 20 या 50 रुपये का हो इससे आपको कोई फर्क नहीं पड़ेगा। अगर आप एक दिन में 50 डिब्बे पैकिंग करते हो तो आपको 1000 रुपये और 100 में 2000 रुपये मिलेंगे। इसमें फस्ट टाइम में जो माल आयेगा वो एक सप्ताह का, यानी सात हजार रुपये का। उसमें आपको 350 डिब्बे बनाना है, चाहे आप उसे एक दिन में बनाओ या एक सप्ताह में। अगर आप जल्दी कर देते हो तो अगले हफ्ते डबल माल आयेगा इसका कोई टारगेट नहीं होता। आप जितना ज्यादा पैकिंग करोगे उतना ज्यादा पैसा मिलेगा। हमारे यहां वीकली पेमेंट होता हैं और मेरा जो वर्कर माल देने जायेगा, वही फिर माल लेने भी जायेगा व साथ में आपको पेमेंट भी देकर आयेगा। इसमें ज्वाइन करने के लिये आपको अपना एक सेल्फी फोटो, आईडी प्रूफ, पूरा एड्रेस व्हाटसएप पर भेज दो। इसके अलावा 620 रुपये आईडी कार्ड के लिये भेजना होगा, जिसमें से 600 रुपये जो मेरा वर्कर माल लेकर पहली बार जायेगा वो उसी समय आपको वापस कर देगा। मात्र 20 रुपये नहीं मिलेगा और जब आपका आईडी कार्ड बन जायेगा उसके 24 घंटे के अंदर ही आप तक माल पहुंच जायेगा। इसके बाद आप काम शुरू कर देना।

इतनी बातें सुनने के बाद मैं बोली भाई, पैसे मैं आप तक कैसे भेजूं? इस पर कहने लगा गूगल या पेटीएम कर दो, चाहे अकाऊंट में भेज सकते हो। मैं बोली कि मेरे पास ये सिस्टम नहीं है, मैं अनपढ हूं, मुझे ये सब समझ नहीं आती गूगल-पेटीएम क्या होता है। मैं जो भी काम करती हूं नकद कैस से ही करती हूं। मेरे यहां जो बंदा माल लेकर आयेगा मैं उसी को रुपये दे दूंगी या आप मेरी सैलरी से काट लेना। वो बोला ऐसा नहीं होता है वो आपको ऑनलाइन ही भेजना पड़ेगा। आप अपने बच्चे या अगल-बगल से भी करवा सकते हो आप उसे नकद कैस दे देना। उस समय मैं सोची देखती हूं आगे क्या कहता है। मैं ये लिंक अपनी बेटी को भेज दी और सारी बातें बताई। मेरी बेटी भी उससे बात की और पूछी, आपका किस नाम से वेबसाइट है? मैं अमर उजाला वेबसाइट पर काम करती हूं, इस पर वो फोन को काट दिया। बेटी मुझे बताई कि मंमी ये फ्रॉड है।

इसके बाद एक हफ्ते तक वो बराबर फोन करके कहने लग गया कि पैसे भेजो। आपका आईडी बनेगा, उसके बाद सामान भेजूंगा तभी तो आप काम स्टाट करोगे। मैं उसको हर बार यही कहती थी कि मैं अनपढ हूं मुझे पेटीएम गूगल कुछ समझ में नहीं आता। जब आप 600 रुपये वापस ही कर दोगे तो मात्र 20 रुपये की ही तो बात है आप अपनी जेब से ही लगा दो। जो आपका वर्कर माल लेकर आयेगा उसे मैं 20 रुपये की जगह 50 दे दूंगी। अगर ऑनलाइन ही जमा होता है तो आप पढे लिखे हो, आपको ये सिस्टम पता है आप कर दो। किंतु वो कहां सुनने वाला था बार बार फोन कर 620 रुपये जमा कराने की बात कहने लगा। बाद में मैं उसका फोन उठाना बंद करके ब्लॉक कर दी।

पिछले हफ्ते अमर उजाला में यही खबर आई कि एक महिला ने थाना में रिपोट दर्ज करवाई है। वो महिला ने पेंसिल, पेन पैंकिंग करने वाली कंपनी को 620 रुपये गूगल से भेजी थी और साथ में अपना आईडी प्रूफ आधार कार्ड। अब उसके खाते से तीन लाख रुपये गायब है और वो फोन भी नहीं उठाता। अब वो महिला क्या करे? यहां टेक्नोलॉजी ने ऐसे ठगों को पकड़ना और सजा देना भी मुश्किल कर दिया है क्योंकि ठग जितने सक्रिय है, पुलिस उतनी ही निष्क्रिय ।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 708 सैक्टर-14 फरीदाबाद से प्रकाशित किया।